Class - B.Com I
Subject - BMC
Paper - I (S/G)
Topic. Level of management
Lecture - 34
By Dr C P Sahu
Marwari College DAR

प्रबन्ध के स्तर -

प्रबंध के अन्तर्गत किसी व्यावसायिक संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए कार्यरत अधिकारियों के वर्गीकरण का किया जा सकता है। वर्गीकरण के आधार पर संबंधित अधिकारियों को अपनी जवाबदेही एवं उत्तरदायित्व का भार सौंपा जाता है जिससे संबंधित अधिकारी अपने कार्यों को निष्पादन करते हैं। (1)

प्रबन्ध के स्तर को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :-

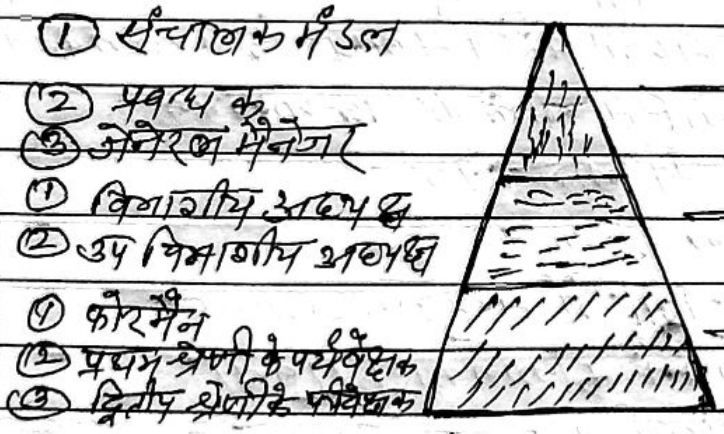

(Top management)

(1) उच्चस्तरीय प्रबंध - इसके अन्तर्गत वे अधिकारी आते हैं जो संस्था के नीतियों एवं उद्देश्यों का निर्माण एवं निर्धारण करते हैं। मध्यस्तरीय प्रबन्धक के द्वारा भेजा गया प्रस्ताव या प्रतिवेदन पर विचार विमर्श करते हैं। इसके अन्तर्गत मुख्यतया संचालक मंडल तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी को शामिल किया जाता है -

(A) संचालक मंडल (Board of Directors). किसी भी बड़े संस्था या कम्पनी में संचालक मंडल उस कम्पनी की नीति निर्धारण करते हैं। कंपनी या संस्था के कार्यों की समीक्षा की जाती है। वे कंपनी के अंशधारियों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। कंपनी के मुख्य अधिकारी

का चयन भी इन्हीं के द्वारा ही किया जाता है। ②
संचालक मंडल कंपनी के ट्रस्टी (Trusty) के रूप में कार्य करते हैं।
एवं उसके हितों की रक्षा करते हैं।

(B) मुख्य कार्यकारी अधिकारी - (Chief Executive Officer)
मुख्य कार्यकारी अधिकारी संचालक मंडल तथा जनरल प्रबन्धक (मैनेजर) के बीच जोड़ने (कड़ी) का कार्य करता है। ये संचालक मंडल द्वारा तैयार की गई नीतियों को कार्यकारी भाषा में स्पष्ट करता है तथा संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए योजनाएँ एवं प्रबन्धको की सफलता से क्रियान्वयन करता है। जिससे निर्देश देकर संगठन के कर्मी को चलाता है।

(2) मध्यस्तरीय प्रबन्ध - (Middle management) इसके अन्तर्गत विभागीय अध्यक्ष (प्रबन्धक) एवं उप विभागीय अध्यक्षों को शामिल किया जाता है। मध्यस्तरीय प्रबन्धक से तात्पर्य उच्च-स्तरीय तथा अन्तिम कड़ी के बीच के अधिकारियों से है जिसे संगठन के एक अंग या हिस्से के लेकर विभिन्न अंगों के प्रशासन का दायित्व निभाने से है।

ड्रान शेरवुड के अनुसार - मध्यस्तरीय प्रबन्ध के निम्न कार्य हैं- (3)

(1) उच्चस्तरीय द्वारा निर्धारित नीति का क्रियान्वयन

(2) कार्यात्मक निर्णयों में भाग लेना

(3) कार्यों का मूल्यांकन करना

(4) संगठन के विभिन्न अंगों में सन्तुलन बनाना

(5) दिन प्रतिदिन परिणामों की जानकारी रखना।

(6) निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए योजनाएं बनाना ~~इ आदि~~

(7) समस्याओं के समाधान के लिये अपने कर्मचारियों या साथियों से विचार-विमर्श करना।

(3) निम्न स्तरीय प्रबन्ध : (Lower Management) इसके अन्तर्गत फोरमैन तथा पर्यवेक्षक आते हैं। ~~इन्हें~~ ये श्रमिकों एवं कर्मचारियों से सीधा सम्पर्क रखते हैं। श्रमिकों द्वारा कार्यों एवं गतिविधियों पर नजर रखे जाते हैं तथा कार्यक्रमों तथा दिशा-निर्देशों के आधार पर ही उनसे कार्य लिया जाता है। निम्नस्तरीय प्रबन्ध को प्रथम स्तरीय प्रबन्ध (First level management) तथा ~~[illegible]~~ पर्यवेक्षकीय प्रबन्ध (Supervisory management) भी कहते हैं।

विद्वान शेरवुड के अनुसार – प्रबन्धकों के कार्यों को निम्न तरीकों से विभाजित किया जाता है — (4)

(1) कर्मचारियों का कार्य निर्धारण करना
(2) मानवीय संबंधों की स्थापना करना
(3) कर्मचारियों से सम्पर्क करना (जरूरत के समय में)
(4) निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार दैनिक योजनाओं का निर्माण
(5) कर्मचारियों के बीच कर्तव्यता की भावना का विकास करना
(6) शीर्ष प्रबंध द्वारा निर्धारित ~~उद्देश्यों~~ एवं नीतियों को सीमाओं में लागू करना एवं कार्य प्रथाओं में सुधार तथा उच्च प्रबन्ध को सुझाव देना इत्यादि

विद्वान अलफोर्ड एवं बीटी ने प्रबन्ध के स्तर को निम्न तरीके से बांटा है —

(1) उच्च प्रबन्ध – (i) अध्यक्ष (ii) प्रबंध संचालक (iii) महाप्रबन्धक
(2) उच्च मध्य प्रबन्ध – विभिन्न विभागीय प्रबन्ध (i) उत्पादन विभाग (ii) वित्त विभाग (iii) विक्रय विभाग
(3) मध्यम प्रबन्ध – (i) क्षेत्रीय प्रबन्धक (ii) विभागीय अधीक्षक (iii) लेखा अधिकारी
(4) पर्यवेक्षक प्रबन्ध – (i) फोरमैन (ii) प्रथम श्रेणी पर्यवेक्षक (iii) द्वितीय श्रेणी पर्यवेक्षक
(5) क्रियाशील शक्ति (Operating Force) श्रमिक वर्ग

उपर्युक्त प्रबन्ध के स्तर के अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि सुविधा के लिए प्रबन्ध के तीन स्तर ही पर्याप्त हैं।

— x —